पढ़ना : क्या सभी ग़लतियाँ सुधरवाई जाएँ ?

मीनू पालीवाल

बच्चे, इंसान, पढ़ना कैसे सीखते हैं; यह प्रश्न जटिल के साथ-साथ दिलचस्प भी लगता है। जटिल इसलिए, क्योंकि काफ़ी प्रयासों के बाद भी कई बच्चे पढ़ना नहीं सीख पाते। और दिलचस्प इसलिए, क्योंकि बच्चों को पढ़ना सीखना ही है। यही सीखने में उन्हें आत्मनिर्भर बनाने की बुनियाद है। पढ़ना-सीखना जटिल क्यों बन जाता है; और बच्चों को पढ़ना सिखाने में क्या मददगार हो सकता है? यह लेख एक बच्चे के पढ़ने की प्रक्रिया के उदाहरणों को देते हुए इन दोनों प्रश्नों पर अपनी बात रखता है। -सं.

सिखाने की प्रक्रिया काफ़ी पेचीदा होती है। इस प्रक्रिया में बहुत सोच-विचार, आत्मचिन्तन, सही सवाल पूछकर चर्चा को दिशा देने, बच्चों में सवाल पूछने का टेम्परामेंट विकसित करने, बच्चों की बातचीत, उनके लेखन का सूक्ष्म अवलोकन करने सहित और भी बहुत-से कारक शामिल होते हैं। इसीलिए शायद यह कहा जाता है कि हम किसी को कुछ सिखा नहीं सकते, सिर्फ़ सीखने का माहौल बना सकते हैं।

पढ़ना-लिखना सीखना आज भी एक चुनौती है। इसका एक कारण पढ़ना-लिखना सिखाने की प्रक्रिया की कमियाँ हो सकता है। बच्चों को कब मदद दी जाए; कितनी मदद दी जाए; और यह मदद कैसे दी जाए? ये ऐसे प्रश्न हैं जिनका कोई एक उत्तर नहीं है। इन प्रश्नों के उत्तर परिस्थिति के हिसाब से बदलते हैं। आइए, ग़लतियों का विश्लेषण करने और ऊपर आए प्रश्नों के उत्तर की ओर बढ़ने के लिए कक्षा 3 के एक बच्चे द्वारा पढ़ी गई कहानी पर चर्चा करते हैं।

यह चर्चा शिक्षकों की मासिक बैठक में की गई थी। बैठक में एक वीडियो दिखाया गया, जिसमें बच्चा दक्षता उन्नयन टेस्ट पेपर से कहानी पढ़ रहा था। कहानी पढ़ रहे बच्चों का वीडियो देखने के लिए यहाँ क्लिक करें–
https://www.youtube.com/watch?v=JqLHtIw89gY

कहानी दक्षता उन्नयन प्रश्नपत्र में दी गई थी।

"दादाजी और राजू रोज़ नदी की तरफ़ जाते थे। एक दिन दादाजी नदी में तैर रहे थे। राजू किनारे पर बैठा था। उसको भी तैरने का मन हुआ। वह नदी में उतर गया। वह नदी में हाथ-पैर मारने लगा। दादाजी उसे तैरना सिखाने लगे। राजू को बहुत मज़ा आया। अब वह रोज़ तैरने जाता है। कुछ ही दिनों में उसने तैरना सीख लिया।"

बच्चे ने इस कहानी को इस तरह पढ़ा

1. दादाजी और राजू रोज़ ('रोज़' पढ़ने में समय लगा) नदी की तरफ़ ('तरफ़' नहीं पढ़ा) जाते थे ('थे' को 'है' पढ़ा, फिर ख़ुद-से सुधार भी किया)।
2. एक दिन दादाजी नदी ('नदी' पढ़ने में समय लगा) में तैर रहे थे।
3. राजू किनारे ('किनारे' पढ़ने में समय लगा) पर बैठा था।

4. उसको भी तैरने (‘तैरना था’ पढ़ा, फिर ख़ुद-से सुधार कर लिया) का मन हुआ।

5. वह नदी में उतर (‘उतर’ पढ़ने में समय लगा) गया।

6. वह नदी में हाथ (‘और’ पढ़ा, फिर सुधार करने की कोशिश की) पैर मारने लगा (लेकिन आगे का पूरा वाक्य ही ग़लत पढ़ा, ‘पेड़ मरने लगा’)। उस बच्चे ने वाक्य को इस तरह पढ़ा– ‘वह नदी में हाथ और पेड़ मरने लगा।’

7. दादाजी उसे तैरना सिखाने लगे।

8. अब वह रोज़ (‘रोज़’ को ‘राज’ पढ़ा) तैरने जाता (‘तैरने जाता’ को ‘तैरना जानता’ पढ़ा) है।

9. कुछ ही दिनों में उसने तैरना सीख लिया (‘सीख लिया’ को ‘सीखु लगा’ पढ़ा।)

कुछ अन्य अवलोकन

1. बच्चा ‘तैरना’ को हर जगह ‘तेहेरना’ पढ़ रहा था।

2. पढ़ने के दौरान बच्चे को कहीं पर भी टोक कर उससे सुधार नहीं करवाया गया।

3. बच्चा ‘तरफ़’ शब्द पर अटक गया था। उसे यह निर्देश दिया गया कि वह जिन शब्दों को न पढ़ पाए, उन्हें छोड़कर आगे का पढ़े।

सहजकर्ता : (बच्चे के पढ़ने का वीडियो दिखाने के बाद) “क्या आपको लगता है कि बच्चे को समझ आया होगा कि उसने क्या पढ़ा?”

सभी शिक्षक : “नहीं।”

सहजकर्ता : “क्यों नहीं समझा होगा?”

सभी शिक्षक : “बच्चे ने बहुत सारी ग़लतियाँ की हैं।”

सहजकर्ता : “आप बच्चे द्वारा की गई ग़लतियाँ चिह्नित कीजिए।”

इसके बाद बच्चे के द्वारा की गई ग़लतियों को बोर्ड पर लिखा गया। (ऊपर बच्चे का पढ़ना देखें।)

सहजकर्ता : “क्या इन सभी ग़लतियों को कहानी पढ़ने के दौरान सुधरवाना पड़ेगा ताकि बच्चा कहानी समझ सके?”

शिक्षक समूह : “नहीं, एक साथ सारी ग़लतियाँ सुधरवाएँगे तो बच्चे के मनोबल पर नकारात्मक असर होगा।”

सहजकर्ता : “ठीक बात है। फिर कौन-सी ग़लतियाँ अभी सुधरवाना ज़रूरी है?”

(शिक्षक समूह से कोई जवाब नहीं आया।)

सहजकर्ता : “इस शान्ति से शायद मैं यह समझूँ कि हम इतना सोचते ही नहीं हैं कि कौन-सी ग़लती सुधरवाई जाए और कौन-सी नहीं। जैसे ही बच्चे ने कुछ ग़लत पढ़ा, तुरन्त ही सुधार करवा दिया, और वह भी एक ही तरीक़े से, ‘स्वयं पढ़कर बता देना’। पढ़ने में मौखिक भाषा, अनुमान, पूर्वज्ञान जैसे कारकों पर हमें अभी समझ बनाने की ज़रूरत है। दूसरा, हमारे लिए हर ग़लत पढ़ा शब्द एक बराबर महत्ता रखता है, जबकि पढ़ने की रणनीति में महत्त्वहीन शब्दों को छोड़ देना जैसी बातें भी शामिल हैं।

यहाँ पर वीडियो का अगला हिस्सा दिखाया गया। वीडियो के लिए क्लिक करें–

https://www.youtube.com/watch?v=0UDR1lBdUwg&t=14s

इस वीडियो में बच्चे से प्रश्न किया जा रहा है कि कहानी में क्या समझ आ रहा है, बताओ! इसपर बच्चा फिर से कहानी ही पढ़ने लग जाता है। आमतौर पर सभी स्कूलों में ऐसा ही देखने

को मिलता है (ज़रा सोचिए, ऐसा क्यों होता होगा!)। आमतौर पर याद करना और दोहरा देना ही सीख लेना मान लिया जाता है।

कहानी की समझ जाँचने के लिए बच्चे से कुछ प्रश्न किए गए।

मैं : "कहानी में कौन-कौन हैं?"

बच्चा : "राजू और दादाजी।"

मैं : "क्या कर रहे हैं वो दोनों?"

बच्चा : "नदी में नहा रहे हैं।"

मैं : "दादाजी, राजू को कुछ सिखा रहे हैं क्या?"

बच्चा : "हाँ, तैरना सिखा रहे हैं।"

मैं : "क्या राजू तैरना सीख गया?"

बच्चा : "हाँ।"

अब आप देख सकते हैं कि बच्चे को कहानी समझ आ गई थी। इस वीडियो के पहले हिस्से को विभिन्न शैक्षिक सत्रों में 200 से 250 शिक्षकों को दिखाया गया। सभी को लगा कि बच्चे को कहानी समझ नहीं आई होगी। ऐसा क्यों हुआ जो इतने बड़े समूह को लगा कि बच्चे को कहानी नहीं समझ आई होगी? इसका उत्तर पढ़ने की आमतौर पर स्वीकृत परिभाषा में है। पढ़ना, यानी, लिखे हुए के समकक्ष बोल देना। जैसा लिखा है वैसा ही पढ़ा जाना चाहिए, यही अच्छे पठन का पैमाना होता है।

इस छोटी-सी कहानी में कुल 64 शब्द हैं। बच्चे ने 7 शब्द (रोज़, तैरने, पैर, मारने, जाता, सीख, लिया) ग़लत पढ़े; 3 शब्दों (नदी, किनारे, उतर) को पढ़ने में अतिरिक्त समय लिया; 1 शब्द (तरफ़) छोड़ दिया; और 2 जगह ख़ुद-से सुधार भी किया।

यदि इस तरह से देखें, तब समझ आता है कि पढ़ने में ग़लतियों का प्रतिशत ज़्यादा नहीं है। और कहानी को समझने के लिए हर शब्द एक बराबर ज़रूरी नहीं होता।

इन ग़लतियों का यदि हमें विश्लेषण करना है, तब ऐसे कुछ प्रश्नों पर विचार करना होगा :

1. यह बच्चा इन शब्दों को क्यों नहीं पढ़ पाया होगा?
2. क्या ये शब्द, अर्थ निर्माण के लिए बहुत ज़्यादा ज़रूरी हैं?
3. क्या आगे पढ़कर इन शब्दों के, इनके अर्थ के बारे में कुछ अनुमान लगाया जा सकता है?
4. 'रोज़' शब्द कहानी की शुरुआत में पढ़ लिया, पर आख़िर में ग़लत पढ़ा, क्यों?
5. बच्चे द्वारा कुछ शब्दों को पढ़ने में ज़्यादा समय क्यों लिया गया?
6. पहले वाक्य में 'नदी' जल्दी पढ़ लिया गया और दूसरे वाक्य में 'नदी' पढ़ने में समय लगा, क्यों?
7. कई जगह बच्चे ने ख़ुद-से दोबारा पढ़कर सुधार कैसे कर लिया?
8. कोई शब्द जो लिखा ही नहीं था, उसे बच्चे ने कैसे पढ़ लिया? (छठवें वाक्य में 'और' लिखा ही नहीं था, पर पढ़ा गया।)

हो सकता है इन सभी प्रश्नों के उत्तर हमें न मिलें, लेकिन यह बात समझ आती है कि हर ग़लती एक-सी नहीं है। 'तरफ़' कठिन शब्द की श्रेणी में भी नहीं आता, फिर भी बच्चे ने इस शब्द को छोड़ दिया। और इतनी सारी ग़लतियों के बाद भी बच्चे ने कहानी का भावार्थ समझ लिया था।

कार्यशाला में शिक्षक समूह से पूछा गया, क्या हर जगह सुधार करवाते तो बच्चे को समझने में परेशानी होती? एक बड़े समूह की सहमति थी, हाँ, परेशानी होती।

अब इस अन्तर्विरोध को महसूस कीजिए। सुधार हम इसलिए करवाते हैं ताकि बच्चे को समझ आए, और उसका पठन बेहतर हो। और यहाँ पर समूह इस बात से सहमत है कि हर जगह सुधार करवाने से बच्चे को अर्थ तक पहुँचने में परेशानी होती। इस परेशानी पर शिक्षकों ने कहा कि कुछ ही जगह सुधार करवाइए।

इस पृष्ठभूमि में ऐसे कुछ प्रश्न भी ज़रूरी हो जाते हैं :

1. आप कहानी में किन ग़लतियों को सुधरवाएँगे और क्यों?
2. किन ग़लतियों को इस वक़्त नहीं सुधरवाएँगे और क्यों?
3. क्या सुधार करवाने का यही एक तरीक़ा होगा कि आप स्वयं सही पढ़कर बता दें?

मेरे विचार

मैंने अपने कई लेखों में पढ़ने के दौरान अनुमान, अर्थ, सन्दर्भ, शब्द पहचान, मौखिक भाषा के प्रभाव, और ये सभी कारक पढ़ने को किस तरह प्रभावित करते हैं, इन मुद्दों पर विस्तार से बात की है। यहाँ पर भी यह बातें लागू होती हैं। इस लेख में, मैं यह बात रखूँगी कि किस ग़लती पर काम किया जाना चाहिए और किन कक्षा प्रक्रियाओं को अपनी कक्षा में जगह देकर हम बच्चों को अर्थपूर्ण तरीक़े से पढ़ना सिखा सकते हैं। मैं इन ग़लतियों में केवल 'हाथ-पैर मारना' और 'सीख लिया' में सुधार करवाऊँगी, क्योंकि इन ग़लतियों से अर्थ बहुत ज़्यादा प्रभावित होता है। 'हाथ-पैर मारने लगा' एक मुहावरा है और 'सीख लिया' कहानी का अन्त है। बाक़ी जो अनुमान की ग़लतियाँ हैं, उनमें से कई मौखिक भाषा के असर की वजह से हैं। ये ग़लतियाँ इस तरफ़ इशारा करती हैं कि बच्चा अपने पढ़े हुए में से अर्थ निर्माण करने की कोशिश कर रहा है (मौखिक भाषा के असर को ग़लती कहना वैसे भी ठीक नहीं है)। यह इसी बात का सबूत है कि बच्चे ने ख़ुद-से कई जगह सुधार भी किया है। मसलन, चौथे वाक्य में उसने पहले पढ़ा, 'उसको भी तैरना था'; फिर सुधार करके पढ़ा, 'उसको भी तैरने का मन हुआ'। कुछ ग़लतियाँ शब्द के मौखिक रूप से परिचित न होने के कारण, जल्दी पढ़ने की कोशिश में, या थोड़ी घबराहट के कारण भी हो सकती हैं (क्योंकि बच्चा बोलकर पढ़ रहा है और कोई वयस्क उसको सुन रहा है)। और भी कुछ कारण हो सकते हैं। बहुत सम्भावना यह भी है कि जब यही बच्चा इस कहानी को दोबारा पढ़ेगा, वह इसे बेहतर पढ़ेगा। यह मैंने एक दूसरे स्कूल में कुछ और बच्चों के साथ महसूस भी किया है।

यहाँ आमतौर पर कक्षा में पढ़ना बेहतर करने का जो औज़ार है, वह 'तुरन्त सुधार करवाना' है। क्या यह औज़ार असल में बेहतर पढ़ने में बच्चे की मदद करता है? इसपर सोचने की ज़रूरत है। यदि शिक्षक द्वारा तुरन्त सुधार करा दिया जाएगा, तब जैसे इस बच्चे ने ख़ुद-से बहुत-सी जगह सुधार किया है, यह मौक़ा बच्चों को कैसे मिलेगा!

पढ़ना एक रेखीय प्रक्रिया नहीं है

कक्षा 1 और 2 के सीखने के प्रतिफलों में इनपर काम करना अपेक्षित है। (चित्रों को देखें)

- प्रिंट (लिखा या छपा हुआ) में मौजूद अक्षर, शब्द और वाक्य की इकाइयों की अवधारणा को समझते हैं, जैसे– 'मेरा नाम विमला है।' बताओ, इस वाक्य में कितने शब्द हैं?/ 'नाम' शब्द में कितने अक्षर हैं या 'नाम' शब्द में कौन-कौन से अक्षर हैं?

- प्रिंट (लिखा या छपा हुआ) में मौजूद अक्षर, शब्द और वाक्य की इकाइयों को पहचानते हैं, जैसे– 'मेरा नाम विमला है।' बताओ, यह कहाँ लिखा हुआ है?/ इसमें 'नाम' कहाँ लिखा हुआ है?/ 'नाम' में में 'म' पर अँगुली रखो।

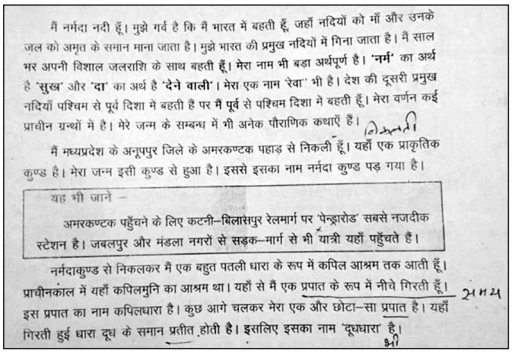

मैं नर्मदा नदी हूँ। मुझे गर्व है कि मैं भारत में बहती हूँ, जहाँ नदियों को माँ और उनके जल को अमृत के समान माना जाता है। मुझे भारत की प्रमुख नदियों में गिना जाता है। मैं साल भर अपनी विशाल जलराशि के साथ बहती हूँ। मेरा नाम भी बड़ा अर्थपूर्ण है। 'नर्म' का अर्थ है 'सुख' और 'दा' का अर्थ है 'देने वाली'। मेरा एक नाम 'रेवा' भी है। देश की दूसरी प्रमुख नदियाँ पश्चिम से पूर्व दिशा में बहती हैं पर मैं पूर्व से पश्चिम दिशा में बहती हूँ। मेरा वर्णन कई प्राचीन ग्रन्थों में है। मेरे जन्म के सम्बन्ध में भी अनेक पौराणिक कथाएँ हैं।

मैं मध्यप्रदेश के अनूपपुर जिले के अमरकण्टक पहाड़ से निकली हूँ। यहाँ एक प्राकृतिक कुण्ड है। मेरा जन्म इसी कुण्ड से हुआ है। इससे इसका नाम नर्मदा कुण्ड पड़ गया है।

यह भी जानें –

अमरकण्टक पहुँचने के लिए कटनी–बिलासपुर रेलमार्ग पर पेन्ड्रारोड सबसे नजदीक स्टेशन है। जबलपुर और मंडला नगरों से सड़क–मार्ग से भी यात्री यहाँ पहुँचते हैं।

नर्मदाकुण्ड से निकलकर मैं एक बहुत पतली धारा के रूप में कपिल आश्रम तक आती हूँ। प्राचीनकाल में यहाँ कपिलमुनि का आश्रम था। यहाँ से मैं एक प्रपात के रूप में नीचे गिरती हूँ। इस प्रपात का नाम कपिलधारा है। कुछ आगे चलकर मेरा एक और छोटा–सा प्रपात है। यहाँ गिरती हुई धारा दूध के समान प्रतीत होती है। इसलिए इसका नाम 'दूधधारा' है।

ये प्रतिफल इस बात को इंगित करते हैं कि अर्थपूर्ण तरीक़े से सीखने के लिए कविता या कहानी जैसी अर्थपूर्ण सामग्री पर काम करना होगा। उस सामग्री पर बहुत-सी बातचीत की जाएगी। इस बातचीत से कुछ शब्दों और वाक्यों के द्वारा पढ़ना सिखाया जाएगा, लेकिन पारम्परिक प्रणाली इसके बिलकुल उलट है।

यह इतना ज़रूरी क्यों है ?

इसी टूल पर काम करते हुए मैंने बच्चे को दो नए वाक्य पढ़ने के लिए कहा।

इसका वीडियो देखने के लिए क्लिक करें–

https://www.youtube.com/watch?v=ixEgGV8MnWs&t=2s

1. घर के बाहर कूड़ा मत फेंको।
2. मेरी गाड़ी का रंग पीला है।

बच्चा, कूड़ा और पीला को अलग तरीक़े से नहीं पढ़ पाया (उसने कूड़ा को 'कूड़' और पीला को 'पिला' पढ़ा)। लेकिन वाक्य में प्रयोग करने पर वह अपने प्रयास से पढ़ पाया, क्योंकि वाक्य ने बच्चे को सन्दर्भ दिया। इस सन्दर्भ से बच्चा अनुमान लगा पाया।

जैसा कि आपने देखा होगा, बच्चा ऊपर लिखे दूसरे वाक्य को पढ़कर अर्थ नहीं समझ पा रहा था। लेकिन जैसे ही बच्चे की वाक्य में आए शब्द 'रंग' को पढ़ने में मदद की गई, उसने पूरा वाक्य पढ़ दिया। जैसे ही रंग शब्द समझ आया, बच्चा 'पीला' शब्द समझ गया और पढ़ पाया। यहाँ आप देख सकते हैं कि किसी शब्द का अर्थ पता होना, किस तरह पढ़ने में मदद करता है। इन दो उदाहरणों से इस बात की सम्भावना नज़र आती है कि अलग से शब्द, वाक्य या अक्षर पढ़ना शायद थोड़ा कठिन होगा। लेकिन कक्षाओं में अक्षर, मात्रा और शब्द पढ़ाने पर ही ज़ोर रहता है। सही मायनों में पढ़ना सीखने में इनपर ज़ोर देना बिलकुल भी मददगार नहीं होता। यह समझने के लिए इसी कार्यशाला के आगे के सत्र में एक शिक्षक द्वारा एक पाठ 'नर्मदा की आत्मकथा' पढ़ा गया।

शिक्षक के पढ़ने में भी कुछ अवलोकन वैसे ही दिखे, जैसे बच्चे के पढ़ने में थे। मसलन,

1. कुछ शब्दों को पढ़ने में अतिरिक्त समय लेना;
2. कुछ शब्दों को बदलकर पढ़ना;
3. कुछ जगह ग़लत पढ़े जाने के कारण दोबारा उन शब्दों पर जाना और उन्हें पढ़ना;
4. जो शब्द लिखा ही नहीं है वह पढ़ा जाना; आदि।

उदाहरण के लिए, पाठ में लिखा था– "मैं मध्यप्रदेश के अनूपपुर ज़िले के अमरकण्टक पहाड़ से निकली हूँ।"

पढ़ा गया– "मैं मध्यप्रदेश के अनूपपुर ज़िले के अमरकण्टक पहाड़ से निकलती हूँ।"

लिखा था– "इसीलिए इसका नाम दूधधारा है।"

पढ़ा गया– "इसीलिए इसका नाम दूधधारा <u>भी</u> है।"

लिखा था– "गुजरात में नवगाँव नामक स्थान पर मुझपर बाँध बनाया गया है।"

पढ़ा गया– "गुजरात में <u>नयागाँव</u> नामक स्थान पर मुझपर बाँध बनाया गया है।"

लिखा था– "मेरे तट पर अनेक गाँव व नगर बसे हैं।"

पढ़ा गया– "मेरे तट पर अनेक गाँव <u>और</u> नगर बसे हैं।"

लिखा था– "कितना प्यार भरा है इस गीत में।"

पढ़ा गया– "<u>जितना</u> प्यार भरा है इस गीत में।"

लिखा था– "यहाँ से मैं एक प्रपात के रूप में नीचे गिरती हूँ।"

('प्रपात' पढ़ने में कुछ क्षणों का समय लिया गया।)

इसी तरह 'प्रतीत' और 'कृत्रिम' शब्दों को पढ़ने में भी थोड़ा समय लगा।

इसी तरह के और भी अवलोकन थे। शिक्षक जब पाठ पढ़ चुके, तब प्रतिभागियों के समक्ष यह प्रश्न रखा गया, क्या अभी आपके साथी द्वारा जो पाठ पढ़ा गया उसमें कुछ ग़लतियाँ हुईं; क्या उन्हें 'ग़लतियाँ' कहा जाना चाहिए; और आप लोगों ने अपने साथी को रोक कर सुधार क्यों नहीं करवाया?

कुछ देर के सामूहिक मौन के बाद मैंने कुछ बातें समूह के सामने रखीं। मैंने कहा कि आपने अपने साथी को शायद इसलिए नहीं टोका होगा क्योंकि शिक्षक के द्वारा किसी शब्द को न पढ़ने से, या जो शब्द नहीं लिखा है उसे जोड़ देने से, अर्थ नहीं बदल रहा था।

उस वक़्त मेरे मन में यह बात भी आई कि शायद शिक्षक समूह अपने साथी को छोटा महसूस नहीं करवाना चाहते होंगे। यह भी एक कारण हो सकता है सुधार न करवाने का। लेकिन बच्चों के साथ काम करने के दौरान यह संवेदना कम ही देखने को मिलती है।

इस पूरी प्रक्रिया का उद्देश्य यह था कि शिक्षक पढ़ने की अपनी परिभाषा में बदलाव करें। वे जैसा लिखा है वैसा ही पढ़ने का आग्रह छोड़कर, बच्चे को पढ़ने के दौरान तुरन्त सुधार के डर से आज़ाद होकर, अनुमान के साथ समझते हुए पढ़ने का मौक़ा दें। इसके लिए भाषा शिक्षण में नीचे लिखी गईं पद्धतियों को कक्षा में जगह देने का आग्रह किया गया।

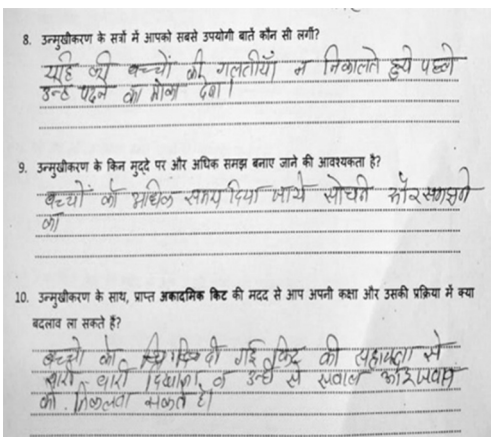

8. उन्मुखीकरण के सत्रों में आपको सबसे उपयोगी बातें कौन सी लगीं?

यहि की बच्चों की गलतीयाँ न निकालते हुये पढ़ने उन्हे पढ़ने का मौका देना।

9. उन्मुखीकरण के किन मुद्दे पर और अधिक समझ बनाए जाने की आवश्यकता है?

बच्चों को अधिक समय दिया जाये सोचने और समझने को

10. उन्मुखीकरण के साथ, प्राप्त **अकादमिक किट** की मदद से आप अपनी कक्षा और उसकी प्रक्रिया में क्या बदलाव ला सकते हैं?

बच्चो को प्रदान की गई किट की सहायता से सारी बातें दिखाकर व उन्हीं से सवाल और जवाब को निकलवा सकते है।

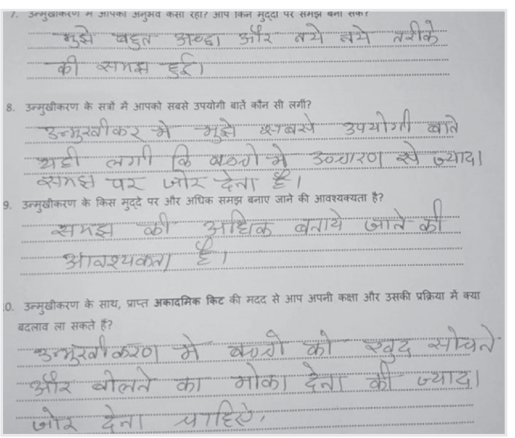

7. उन्मुखीकरण में आपका अनुभव कैसा रहा? आप किन मुद्दों पर समझ बना सके?

मुझे बहुत अच्छा और नये नये तरीके की समझ हुई।

8. उन्मुखीकरण के सत्रों में आपको सबसे उपयोगी बातें कौन सी लगीं?

उन्मुखीकरण मे मुझे सबसे उपयोगी बाते यही लगी कि बच्चो मे उच्चारण से ज्यादा समझ पर जोर देना है।

9. उन्मुखीकरण के किस मुद्दे पर और अधिक समझ बनाए जाने की आवश्यकता है?

समझ को अधिक बनाये जाने की आवश्यकता है।

10. उन्मुखीकरण के साथ, प्राप्त **अकादमिक किट** की मदद से आप अपनी कक्षा और उसकी प्रक्रिया में क्या बदलाव ला सकते हैं?

उन्मुखीकरण मे बच्चो को खुद सोचने और बोलने का मौका देना को ज्यादा जोर देना चाहिऐ,

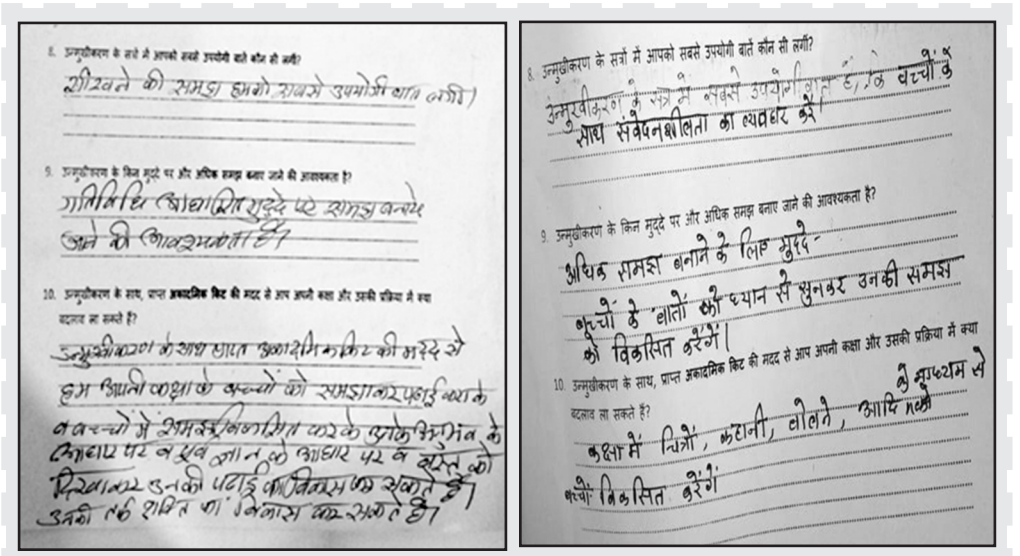

8. उन्मुखीकरण के सत्रों में आपको सबसे उपयोगी बातें कौन सी लगीं?

सीखने की समझ हमको सबसे उपयोगी बात लगी।

9. उन्मुखीकरण के किन मुद्दे पर और अधिक समझ बनाए जाने की आवश्यकता है?

गतिविधि आधारित मुद्दे पर समझ बनाये जाने की आवश्यकता है।

10. उन्मुखीकरण के साथ, प्राप्त अकादमिक किट की मदद से आप अपनी कक्षा और उसकी प्रक्रिया में क्या बदलाव ला सकते हैं?

उन्मुखीकरण के साथ प्राप्त अकादमिक किट की मदद से हम अपनी कक्षा के बच्चों को समझाकर पढ़ाई करा के व बच्चों में समझ विकसित करके ...

8. उन्मुखीकरण के सत्रों में आपको सबसे उपयोगी बातें कौन सी लगीं?

उन्मुखीकरण के सत्र में सबसे उपयोगी बात है कि बच्चों के साथ संवेदनशीलता का व्यवहार करें।

9. उन्मुखीकरण के किन मुद्दे पर और अधिक समझ बनाए जाने की आवश्यकता है?

अधिक समझ बनाने के लिए मुद्दे- बच्चों के बातों को ध्यान से सुनकर उनकी समझ को विकसित करेंगे।

10. उन्मुखीकरण के साथ, प्राप्त अकादमिक किट की मदद से आप अपनी कक्षा और उसकी प्रक्रिया में क्या बदलाव ला सकते हैं?

कक्षा में चित्रों, कहानी, बोलने, आदि के माध्यम से बच्चों में विकसित करेंगे।

1. पढ़ने के दौरान सुधार न करवाएँ। बच्चे के पढ़ने में यदि किसी तरह का पैटर्न दिख रहा है, तो उसे नोट करें।
2. बच्चे को मौखिक पठन के दौरान कोई अनुच्छेद और / या कुछ लाइनें पूरी पढ़ने दें।
3. पढ़ लेने के बाद बच्चे से ज़रूर पूछें कि उसने जो पढ़ा है, शॉर्ट में बताए।
4. न बता पाने की स्थिति में कक्षा के दूसरे बच्चों को इसका उत्तर देने का मौक़ा दें।
5. जिन ग़लतियों से अर्थ बहुत ज़्यादा प्रभावित होता है, शुरुआत में उन्हीं ग़लतियों पर काम करें।

सत्र के अन्त में शिक्षकों से फ़ीडबैक लिया गया। इस फ़ीडबैक में शिक्षकों ने जो कहा, वह आप दिए गए फ़ीडबैक फॉर्म में देख सकते हैं। हमें इस बात कि ख़ुशी है कि हम अपनी बात शिक्षकों तक पहुँचा पाए।

नोट

मध्यप्रदेश में आकलन के लिए दक्षता उन्नयन टूल का इस्तेमाल होता है। इस टूल में पढ़ने का स्तर देखने के लिए पहले अक्षर, फिर शब्द, फिर वाक्य और अन्त में कहानी पढ़ना होता है। इस टूल में आपने देखा कि एक बच्चा कहानी पढ़कर तो समझ लेता है, पर कुछ शब्द पढ़ने में उसे परेशानी होती है। चूँकि पढ़ना एक रेखीय प्रक्रिया नहीं है, इसलिए इस टूल की भी अपनी सीमा है।

मीनू पालीवाल ने अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन में 6 वर्ष काम किया है। आप फ़ेलोशिप प्रोग्राम के ज़रिए अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन से जुड़ीं। इससे पहले उन्होंने 6 वर्ष आईसीआईसीआई बैंक में काम किया। वे अपने मन में आने वाले सवालों की तलाश में शिक्षा और शिक्षण प्रक्रिया से जुड़ीं। उन्हें प्राथमिक कक्षाओं में काम करना अच्छा लगता है।

सम्पर्क : paliwal.meenu@gmail.com